स्वस्थानी ब्रतकथा में शक्तिपीठ उपासना पद्धति

प्रोफे. गोविन्द एस. उपाध्याय,
त्रिभुवन विश्वविद्यालय
नेपाल

सारांश-

स्वस्थानी ब्रतकथा मूलतः संस्कृत भाषा में और वाद में स्थानीय नेवारी भाषा में अनुदीत मौखिक/लिखित धार्मिक तथा सांस्कृतिक ग्रन्थ है जो नेपाली धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है । प्रमाणिक रचनाकार और समय अज्ञात है । संस्कृत से नेवारी और नेवारी से नेपाली भाषा में अनुदित होकर आज स्वस्थानी ब्रतकथा नेपाली लोक संस्कृतिका अभिन्न अङ्ग हैं। इसमें भगवान् शिव के द्वारा ५० शक्तिपीठों का निर्माण, नामाकरण, देवताओं के आराधना पर देवी के द्वारा विशिष्ट शक्ति प्रदान करना एवं ५० ज्योतिर्लिङ्गोका सन्तुलित वर्णन किया गया है। स्वस्थानी में उल्लिखित शक्तिपीठों और भारतवर्ष के हरेक ग्राम तथा शहर में उपलब्ध देवी मन्दिर एवं पहाड की चोटियों पर स्थापित असंख्य "कोटों" से सिद्ध होता है कि भारतवर्ष, ख़ासकर नेपाल क्षेत्र में शक्ति उपासना की सनातन परम्परा रही है और मौलिकरूप से नेपाल शाक्त प्रधान क्षेत्र है । स्वस्थानीका शाब्दिक अर्थ – स्व अर्थात् अपने स्थानी अर्थात् स्थानीयता होता है । स्व अर्थात् अपने भीतर की शक्ति को साक्षात्कार कर उसे पूर्णतया स्वाधीन बनाना ही स्वस्थानी है – ऐसा विद्वानों का अभिमत है । यद्यपि ग्रन्थ में वर्णित मूलप्रसंग स्कन्धपुराण से ग्रहण गया हो लेकिन इस में बहुतायत प्रसंग नेपाली समाज में सनातन रूप में प्रचलित शक्ति आराधना के मूल स्वरुप को प्रस्तुत करता है । शक्ति परम्परा में शक्तिपीठों का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है । नेपाल के हरेक क्षेत्र में शक्ति की उपासना देवी मंदिरों में किया जाता है । नवरात्र के अवसर पर शक्ति आराधना करना एवं शक्तिपीठों पर बलि देना नेपाली सांस्कृतिक परम्पराका अभिन्न अंग है । शैव, शाक्त तथा तन्त्र परम्पराओं के साथ नेपाल में शक्ति की आराधना की जाती है । इस कार्यपत्र का उद्देश्य नेपाली धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवनशैली के साथ अभिन्न स्वस्थानी ब्रतकथा में वर्णित ५० शक्तिपीठों एवं ५० ही के सङ्ख्या में शिवपीठों के विषय में प्रमाणिक जानकारी देना है ।

१. स्वस्थानी का परिचय

स्वस्थानी ब्रतकथा विक्रम सम्वत् १६३०[१] में संस्कृत भाषा में लिखी मूलप्रति उपलब्ध है । इसी समय काठमान्डौ उपत्यका आदिवासी नेवार समुदाय की मातृभाषा नेवा: अर्थात् नेवारी में अनूदित कृति उपलब्ध हैं । वाद में अज्ञात

व्यक्ति के द्वारा नेपाली भाषा में अनुवाद किया गया होगा । स्वस्थानी ब्रतकथा का रचनाकार, रचना समय दोनों ही अज्ञात हैं । ऋषि परम्परा में अपना नाम और काल दोंनों को अज्ञात राखने की विनम्रता निर्वहन किया गया है । आज नेपाली समाज में अनेकौं स्वस्थानी ब्रतकथा के संस्करण उपलब्ध है परन्तु सब से प्राचीन प्रति वाराणसी दुर्गा साहित्य भण्डार से प्रकाशित मानी जाती है जो सर्वप्रथम आधुनिक छापा का उपयोग करते हुए सन् १८९० में छपी थी । काठमांडू, नेपाल के प्राचीन संस्कृति तथा हस्तलिखित संग्रहालय में विक्रम सम्वत् १६३० के आसपास की हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हैं । स्वस्थानी में उपलब्ध कथावस्तु शिव महापुराण तथा स्कन्ध महापुराण, श्रीमद्भागवत के प्रसंगों पर आधारित माना गया है लेकिन इस सम्बन्ध में विद्वानों विभाजित हैं । स्वस्थानी ब्रतकथा की विशिष्टता है कि यह नेपाल केन्द्रीत है और शाक्त, शैव एवं वैष्णव परम्पराओं को एकआपस में जोड़ता है । आज भी काठमांडू के पूर्वी क्षेत्र सांखू में देवी स्वस्थानी का पीठ, शालीनदी स्थित है और हरेक वर्ष पुष पूर्णिमा से माघपूर्णिमा पर्यन्त महिलाएं देवी पार्वती की भक्ति में कल्पवास करती हैं । अमेरिकी विश्वविद्यालय में अध्यनरत लिंडा लुईस ने सन् १९८५ में स्वस्थानी ब्रत में विद्यावारिधि (Swasthani Vrata - Newar Women and Ritual in Nepal : Linda Louise Iltis) की उपाधि प्राप्त की है । साथ ही, नेपाली विश्वविद्यालय में इस ब्रतकथा से सम्बन्धित अनेकौं अनुसन्धान कृतियाँ उपलब्ध हैं । आधुनिक महिलावादी इस ग्रन्थ की आलोचना करते हैं क्योकि इस में शिव शर्मा से ९ वर्षीया गोमा के विवाहका प्रसंग है ।

२. विषयवस्तु का परिचय

स्वस्थानी ब्रतकथा ऋषि अगस्त्य और शिवपुत्र कुमार के संबाद से आरम्भ होता है । जिस में ऋषि अगस्त्य प्रश्नकर्ता और कुमार उत्तरदाता हैं । मूलत: नेवारी भाषा में लिखित तथा नेपाली भाषा में अनूदित नेपाली भाषा के स्वस्थानी ब्रतकथा में ३१ अध्याय हैं । इन अध्यायों में क्रमशः प्रथम अध्याय में मधुकैटभका बध और उनके शरीर को ही पृथ्वी मान कर सम्पूर्ण सृष्टिकार्यका वर्णन किया गया है । दूसरे अध्याय में दक्ष प्रजापति और उस से सतीदेवी के जन्मका प्रसंग है । तीसरे और चौथे अध्याय में शिवका सतीदेवी के साथ छलपूर्वक विवाह त्रिपुर-दहन प्रसंग नेपाली मौलिक शैली में वर्णित है । स्वस्थानी के पाँचवे अध्याय में दक्षप्रजापति के द्वारा यज्ञका आयोजन करना और भगवान् शिवसहित सतीदेवीको आमन्त्रण न करना, सतीदेवी के द्वारा अपने पति से यज्ञ में चलने का आग्रह है, अन्त्य में अकेले दक्ष यज्ञ में पहुँच कर अपने पति शिवका स्थान नदेख, अग्निकुण्ड में प्रवेशका प्रसंग है । छड़े और सातवें अध्याय में दक्षाका विनाश एवं दक्ष के धड़ में बकरे का शिर जोड़ने का प्रसंग है । आठवें अध्याय में शक्ति के विरह में व्यथित भगवान् शिव देवी सति का मृत शरीर के साथ अज्ञात दिशाकी और निकट जाते

हैं । नवम, दशम और एकदश अध्यायों में सतीदेवी के अंगों के पतन से विभिन्न शक्तिपीठों की उत्पत्तिका वर्णन हुआ है । शक्तिपीठों का निर्माण, नाम और शक्तिपात तथा ज्योतिर्लिंगों का उल्लेख होने से "शक्तिमयम्" सन्दर्भ इन्हीं अध्यायों में सीमित होता है ।

एकादश अध्याय में थके भगवान् शिवका पाशुपत क्षेत्र मृगस्थलीमें विश्राम और देवताओं का आगमनका प्रसंग है । द्वादश, त्रयोदश और चतुर्दश अध्यायों में भगवती पार्वती के द्वारा शिव आराधना, तारकासुर संहारका अत्याचार, शिव-पार्वती के विवाहका प्रसंग है । पञ्चदश अध्याय में कुमार के द्वारा तारकासुरका वध, सोलवें अध्याय में मानसरोवर का बर्णन, सत्रहवें अध्याय में जालंधर वधका प्रसंग और देवी पार्वती के द्वारा स्वस्थानी ब्रतका प्रसंग है, इसी प्रसंग में द्रोणपुत्र अश्वथामाको स्वस्थानी यज्ञका प्रसाद प्राप्त होना और उसका पाताल में प्रवेश करने का नवीनतम प्रसंग महत्वपूर्ण है । यहाँ उल्लेख करना उचित होगा कि द्रोणपुत्र अश्वत्थामा को देवी के प्रसाद से शिरोजन्य पीडा से मुक्ति मिलता है । उन्नीसवीं अध्याय में शिबभट्ट ब्राह्मण और ९ वर्षीया गोमा ब्राह्मणीका प्रसंग है । यहाँ सेइकतीस अध्याय तक गोमा, शिब भट्ट, गोमा के पुत्र नवराज और चन्द्रावती के दुःख, राज्य प्राप्ति, अभिमान, राज्यच्युत एवं देवी स्वस्थानी के ब्रत के प्रभाव से पुनः राज्यप्राप्ति एवं आनन्द प्राप्तिका प्रसंग है ।

३. भारतवर्ष में शक्ति उपसना

भारतवर्ष में शक्ति उपासना का सबसे महत्वपूर्ण अवसर नवरात्र है । शक्ति उपासना में समर्पित नवरात्र चैत्र तथा अश्विन दो महीनों में निर्धारित है। नेपाल में आश्विन नवरात्रों के अवसर पर भगवती शक्ति की उपासना होती है । शास्त्रीय तथा स्थानीय पद्धतियों के अनुसार विविधताएँ भी हैं । कहीं पशुपक्षी बलि के साथ तो कहीं अहिंसक उपासना होती है । नवरात्र के अवसर पर स्थानीय शक्ति पीठों, निजी घरों एवं नवरात्र के अवसर पर निर्मित प्रतिमाओं में सभक्ति शक्ति की उपासना की जाती है । नेपाल में दशमी का पर्व शक्ति उपासना की समापन उत्सव के रूप में अक्षता, मकै और गहुँ के नव पल्लवित अंकुर के साथ शक्ति के प्रसाद के रूप में माथे पर वृद्धजनों से पर ग्रहण किया जाता है । इस "दशैं" पर्व नेपाली धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सामजिक क्षेत्र में सब से महत्वपूर्ण सम्मान प्राप्त है। शासकीय तौर पर विद्यालय और विश्वविद्यालयों में ७ दिन से २२ दिनों का अवकाश मिलता है । नवरात्र के पर्वको स्त्री तथा पुरुष सामान रूप से मानते/मनाते हैं । नेपाल के पहाड़ी क्षेत्रों में दशमी देवी के प्रसाद ग्रहणका पर्व होता है किन्तु नेपाल कही मधेश प्रदेश में इसे राम-विजय के पर्व के रूप में मनाया जाता है ।

४. शक्ति उपासना के दो स्वरूप

नेपाल में शक्ति उपासना केवल नवरात्र तक

सीमित नहीं है अपितु स्वस्थानी ब्रतके रूप में मूलत: एक महीने तक पूर्णतया कल्पवास में रह कर शक्तिकी उपासना करतीं हैं । स्वस्थानी ब्रत के रूप में शक्ति उपसना की दो विधियाँ नेपाली समाज में प्रचलित हैं : सामान्य उपासना और विशेष उपासना । सामान्य शक्ति उपासना घर पर ही किया जाता है । पुष महीने की पूर्णिमा तिथि से आरम्भ होकर माघ पूर्णिमा को समापन होता है । इस विधि में घरपरिवार के लोग बैठक अथवा बरांडे पर एकत्र हो कर सामूहिक रूप में देवी की पूजा करते हैं और परिवार के एक सदस्य से स्वस्थानी ब्रतकथा सुनते हैं । हरेक दिन एक अध्याय पढ़ा जाता है । कथा के अन्त्य में देवी की आरती और प्रसाद ग्रहण किया जाता है । माघपुर्णिमा को व्रतका समापन होता है । कहीं सामान्य रूप से तो कहीं जागरण भजन के साथ समापन होता है ।

विशेष उपासना के लिए उपासक महिला अथवा पुरुष नदी वा तलाव में कल्पवास करते हैं । उपासक को एक ही रक्त बस्त्र धारण करना होता हो । एक समय मीठारहित भोजन करना होता है । तीन समय नदी में स्नान करना और तान्त्रिक विधि से देवी की अर्चना करना होता है । उपासक चटाई पर सोता है । ब्रह्म मुहुर्त में उठाना होता है । पतिपत्नी को अलग अलग रह कर पूर्णतया ब्रह्मचर्य का पालन करना अनिवार्य होता है । दिन में सोना, अमीश भोजन करना, पशुपक्षी और व्रतरहित व्यक्तिको स्पर्श करना निषिद्ध माना गया है । दिन भर भगवती शक्तिका शक्ति बीजका चिन्तन करना होता है । व्रत के अन्त्य में (माघ पूर्णिमा को) स्वस्थानी व्रतकथा में वर्णित विधि से व्रतका समापन किया जाता है । संभवत: शक्ति उपसाना का यह कठोरतम पद्धति है जो एक महीने तक चलता है और उपासक पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ सम्पन्न करता है । नेपाल के अतिरिक्त भारत में "स्वस्थानी व्रत" के रूप में सम्पन्न किया जाने वाला अद्भूत शक्ति उपसना का यह स्वरूप उपलब्ध नही है । भारत के उत्तराखण्ड क्षेत्र में परिवर्धित रूप में स्वस्थानी है किन्तु प्रस्तोता को इस के विषय विस्तृत जानकारी नहीं है ।

५. स्वस्थानी शक्तिका स्वरूप

स्वस्थानी शब्दका शाब्दिक अर्थ संस्कृत के स्व एवं स्थान से निष्पन्न होता है । विद्वानों ने स्वस्थानी के स्थानीय तथा शब्दों के आधार पर अर्थ निर्धारण किया है । जो अपने स्थान पर स्थित है – वही स्वस्थानी है । इस अर्थ में स्वस्थानी की उपासना का अर्थ है स्थानीय शक्ति की उपासना जो ग्रामदेवी वा गृहदेवी वा स्थानीय शक्ति के रूप में शक्ति प्रदाता हैं । द्वितीय अर्थ में स्व अर्थ आत्म है और स्थानका अर्थ उपासक का शरीर हैं । स्वस्थानी की उपासना शरीर मन्दिर में विराजमान आत्मशक्ति की उपासना करना है । कल्पवास में रहकर कठोर तपस्या करना मूलतः शरीरस्थ आत्मशक्ति को जागृत करना है । इसी संदर्भ में आचार्य गिरिधर भट्ट द्वारा रचित ज्ञानसंकलिनी तंत्र के अनुसार "शक्ति निवास चलायमान चित्त में होता है वही शक्ति स्थिर चित्त

में शिवतत्व के रूप में विराजमान होती हैं । चित्त के स्थिर हो जाने पर शरीर के न होने पर भी शक्ति स्थिर हो जाती है (ज्ञान.सत ६४) आगे भगवान् शिव देवीको बताते हैं कि "मानवीय शरीर में उर्ध्वशक्ति कंठ प्रदेश में, निम्न शक्ति गूद प्रदेश नें मध्य शक्ति नाभि प्रदेश में और शक्ति का पूर्ण प्रत्यक्ष होने पर व्यक्ति निरांजन बन जाता है (ज्ञान.सत ६६) । यह शक्ति अक्षरा प्रकृति है । माया है । पालिनी, सृष्टि तथा संहारकारिणी, अविद्या, मोहिनी, शब्दरूपा तथा यशस्विनी है (ज्ञान.सत ९८-९९) । नेवार समुदाय में "म्ह-पूजा" प्रचलित है जिस में व्यक्ति को अपने शरीर की पूजा करना होता है । स्वस्थानी पूजा के माध्यम से शरीर में स्थित सम्पूर्ण विद्या, अनेक प्रकार के अलंकारों से सुसज्जित, स्वर्ण के सामान आभा युक्त देवी स्वस्थानी विश्वकी स्वामीनी हैं और शक्तिरूप हैं।

६. शक्तिपीठों का उल्लेख

पाठकों को स्वस्थानी में वर्णित ५० शक्तिपीठों के निर्माण, स्थान तथा उन शक्ति पीठों के नामों को जानना बहुत ही महत्वपूर्ण होगा । यद्यपि शक्तिपीठों की उत्पत्ति के प्रसंग पुराणों में उपलब्ध हैं । परन्तु जिस प्रकार से शक्तिपीठों का स्वस्थानी में वर्णन किया गया है, भिन्न हैं । देवता, सम्पूर्ण तीर्थआदि का शक्ति के रूप में आराधना करते हैं ।

कठोर उपासना करते हुए स्वस्थानी शक्तिका को निम्न स्वरूप में साक्षात्कार करता है ।

अष्टासु च दलेस्वेषु मातृकाष्टास्थिता तथा । खड्गं हि त्रिशुलंचोर्ध्वंमधश्च वर्मुत्पलम् ।

चतुर्भुजा त्रिनेत्रा च सर्वलङ्कार भूषिता सुवर्णवद्विकाशाभा स्वस्थानी जगदीश्वरी ।।

स्कन्ध महापुराण

"अष्टमातृकाओं से परिविष्ट एवं अष्टदल कमल के ऊपर विराजमान, दाहिने दोनों हाथों में क्रमशः त्रिशूल एवं खड्ग, बायें दो हाथों में क्रमशः कमल एवं माला धारण किए हुई, तीन आँखों वाली

साथ ही, जिन शक्तिपीठों का उल्लेख स्वस्थानी ब्रतकथा में हैं, उन्हें खोजना, पहचानना और संरक्षित करना समीचिन होला । स्वस्थानी वर्णित कुछेक शक्तिपीठ वर्तमान नेपाल में हैं, कुछ वर्तमान भारत में चिह्नित है परन्तु अधिकांश शक्तिपीठों का पहिचान होना शेष है और अनुसन्धान अपेक्षित हैं ।

"स्वस्थानी में वर्णित शक्ति पीठों के पतन के स्थान तथा शक्ति पीठों के नाम निम्न प्रकार हैं :

संख्या	स्थान	शक्तिपीठ का नाम	आशिर्वाद प्राप्त देव	महादेव का नाम	शक्ति	अन्य
१.	काठमाडौं	गुह्येश्वरी, नेपाल पीठ	इन्द्रआदि देवता	सिद्धेश्वर	देवत्व	

२.	आसाम	कामाक्षी, कामरूपपीठ	यक्षगण	चक्रेश्वर	यक्षत्व	
३.	वाराणसी	विशालाक्षी वाराणसीपीठ	गन्धर्वगण	विश्वेश्वर	गायन विद्या	
४.	पौरबन्ध	अम्बिकादेवी, पौरबंधपीठ	दैत्यगण	धनेश्वर	विजयशक्ति	
५.	कास्मिर	शारदा, शारदापीठ	किन्नरगण	श्रमधारेस्वर	इच्छा सिद्धि	
६.	कान्यकुब्ज	झंकेश्वरी, पीठ	रावण	दुग्धेस्वर	देवलाई जित्ने	
७.	पुण्यगिरी	पुण्यगिरी, पीठ	गन्धर्व	चन्द्रस्वर	नृत्यशक्ति	
८.	अमुंडाचल	पुकविदेवी, पीठ	नारद	इच्छाविरूकेस्वर	बाक्य सिद्धि	
९.	अस्तांचल	कर्तेश्वरी,	राधागण	निद्रातपेश्वर	कृष्ण प्रेम	
१०.	एकावर	सिद्धेश्वरी	मसान	दधेश्वरी	दाहकता	
११.	त्रिश्वेत	महाकालेश्वरी, पीठ	यमराज	त्रिपुरेश्वर	संहारक	
१२.	कामरोष्ट	कामिनी देवी	पृथ्वी	कालेश्वर	धारणशक्ति	
१३.	कैलाश	पार्वती देवी, कैलाशपीठ	ब्रह्मा	विश्वम्भर	सृष्टि शक्ति	
१४.	भृगु	मीनाक्षी, भृगुपीठ	धर्मदत्त	सत्येश्वर	विजय	
१५.	केदार	केदारेश्वरी तथा पीठ	एकादशरूद्र	कोटेश्वर	समान शक्ति	
१६.	चन्द्रपुर	सिद्धिकाली, चन्द्रपुरपीठ	दश दिक्पाल	प्रकाशेश्वर	स्थिरता	
१७.	श्रीमा	भद्राक्षी देवी, श्रीपीठ	अष्टवसु	कमलेस्वर	दीर्घायु	
१८.	एकवीर	एकवीर देवी, पीठ	नाग	हाटकेश्वर	पातालको शक्ति	
१९.	जालन्धर	जालपादेवी, जालन्धरपीठ	कामधेनु	विशाचेश्वर	पवित्रता	
२०.	मल्लव, पीठ	महाकाली,	बाह्र सूर्य	भूपालेस्वर	महिनाको स्वामी	
२१.	कुशलान्तक	स्मशानकाली देवी	नक्षत्र	क्षीरेश्वर	ग्रहशक्ति	
२२.	कोट	भद्राक्षी, देवीकोट पीठ	बाह्र राशी	मातेश्वर	मनुष्योका शासन	

२३.	गोकर्ण	भैरवीदेवी, गोकर्णपीठ	विश्कुम्भादि योग	जागेश्वर	ज्योतिष स्वामित्व	
२४.	मातुलेश्वर	योगेश्वरीदेवी, मातुपीठ	कश्यपादि सप्तऋषि	बुधराधेश्वर	वेदोंका ज्ञान	
२५.	अट्टहास	भ्रामरीदेवी	वाग्मतीआदि नदी	सप्तभूतेश्वर	मुक्ति	८
२६.	विश्व	भुवनेश्वरी	श्रीकृष्ण	कृष्णवर्णश्वर	मोहिनी शक्ति	
२७	राजगृह	राजगृहेश्वरी	वायु	हरेश्वर	प्राणशक्ति	
२८.	महापन्थ	चण्डिकादेवी	अप्सरा	विश्वामित्रेश्वर	रूप	
२९.	कोलापुर	महालक्ष्मी	गरुढ़	मशानेस्वर	सर्पसंहारक	
३०.	एकापुर	साधुक्षी	प्रस्तर	उमन्तेश्वर	देवमूर्तिहेतु प्रयोग	
३१.	ओंकारेस्वर	मात्रिकादेवी, ओमकारपीठ	कल्पवृक्ष	सन्तानेश्वर	ईच्छित फल	
३२.	जयन्तीपुर	जयन्तीदेवी	तुलसी तथा कुशा	कल्पेश्वर	आदरणीय	
३३.	उज्जैन	महाकाली, उज्जैनपीठ	हिमालय पर्वत	झड्केश्वर	मोक्षस्थान	
३४.	चरित्रपुर	स्वर्णश्वरी	चौसठ योगिनी	वायव्येश्वर	मन्त्रसिद्धी	
३५.	क्षिरिकापुर	युगाद्यादेवी	मातृकागण	सहस्रनेत्रेश्वर	स्थानदेवी	
३६.	हस्तिनापुर	चन्डेश्वरी	सुदर्शनचक्र	मुसुखारेस्वर	विनाशक शक्ति	
३७	उद्दीययान	विमलादेवी	हनुमान	यक्षेश्वर	रामभक्ति	
३८.	प्रजंग	सुन्दरी	दशअवतार	महिद्रेश्वर	दैत्य संहारक	
३९.	विश्व	झंकेश्वरी	विश्वकर्मा	कुण्डलेश्वर	स्थापत्य विद्या	
४०.	मायापुर	मायादेवी	चौसठ लिंग	तपेश्वर	स्वयंभू	
४१.	मल्लागिरी	मल्लिकादेवी	भूत, प्रेत विशाच	कुशोपन्नेश्वर	शक्ति सामिप्यता	
४२.	मलायागिरी	बज्रेश्वरी	सत्य	जागेश्वर	मोक्ष	
४३.	सेना	उमादेवी/पीठ	नवग्रह	कागेश्वर	लाभहानी	
४४	मेरूगिरी	पूर्णादेवी/पीठ	सप्तनाग	जिह्वापतेश्वर	अगम्यता	

४५	महिन्द्रगिरी	इन्द्राक्षी देवी	लक्ष्मी	तारकेश्वर	कार्तिक में पूजा	
४६	वानरपुर	कामेश्वरी	कमलआदि पुष्प	वेदान्तेश्वर	पूजा में प्रयोग	
४७	हिरण्यपुर	नवरत्नेश्वरी	सरस्वती	नारदेश्वर	बाणी में निवास	
४८	महालक्ष्मीपुर	कमलाक्षी	अष्टसिद्धि	त्रिकुटेश्वर	अमरता	
४९	उद्यान नगर	त्रिपुरासुन्दरी	मेघ	भैरवेश्वर	वर्षा शक्ति	
५०	छाँयाछत्र	छत्रेश्वरी/पीठ	अष्टभैरव	पीशाचेश्वर	मातृकापति	

उपर्युक्त ५० शक्ति पीठों और लिंगों का जिन स्थानों में स्थित होना निर्धारित किया गया है अधिकांश की स्थिति अज्ञात है । नेपाल में नेपाल पीठ और गुह्येश्वरी देवी, गोकर्ण पीठ और भैरवी देवी, त्रिपुरासुन्दरी देवी और त्रिपुरासुन्दरी पीठ तथा अन्य दो पीठों की स्थिति उपलब्ध है । भारत से उज्जैन, वाराणसी, कश्मीरआदि पीठों की स्थिति उपलब्ध है अधिकांश पीठों की स्थिति के लिए अनुसंधान बान्छनीय है ।

७. स्वस्थानी उपासना एवं शक्तिका सम्बन्ध

स्वस्थानी उपासना पहाड़ी नेपाली समाज में प्रचलित अपनी मौलिक साधना तथा उपासना पद्धति है । इस उपासना पद्धति की विशिष्टता है कि इस में अध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक शक्ति प्राप्त करने लिए उपासना की जाती है । इस उपसना में शाक्त, शैव तथा वैष्णव परम्पराओंका संयोजन है । स्वस्थानी पूर्णता भगवती पार्वती के लिए समर्पित उपासना पद्धति होनें से शाक्त परम्परा, शिव के साथ स्वस्थानी की अर्चना करने से शैव तथा उपासना काल में सूर्यको जलदान एवं यज्ञ तथा अर्चना सामग्री में मांसमदिरा तथा अन्य बलियों के अभाव से वैष्णवता का संयोजन होता है । शक्ति पीठों में जा कर रामकृष्णआदि विष्णु अवतार, भैरवआदि शिव अवतार तथा लक्ष्मी, सरस्वतीआदि शक्ति अवतार द्वारा देवी स्वस्थानी की उपासना करना और स्वस्थानी के द्वारा उन्हें अनुकूल वरदान प्रदान करने से भी शैव, शाक्त तथा वैष्णव मतों का समायोजन होता है । नेपाली सामाजिकस्तर पर भी स्वस्थानी व्रतकथा शैव, शाक्त, स्मार्त तथा बैष्णव सभी के लिए स्वीकार्य है । स्वस्थानी उपासना की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है कि यह पूर्णतया नेपाली मौलिक शक्ति उपासना का जीवन्त अभ्यास है ।

८. निष्कर्ष

वैदिक दर्शन (हिन्दू, जैन, बौद्ध तथा शिख) तथा दार्शनिकों का लक्ष दुःख से मुक्ति एवं मोक्ष की प्राप्ति है । गौवंश में भक्ति, औंकार में आस्था तथा पुनर्जन्म में विश्वास सनातन धर्म का मुख्य पहिचान है । सनातन संस्कृति में अनेकौं सम्प्रदाय तथा उपासना पद्धति विद्यमान है । इन उपासना पद्धतियों में शाक्त, शैव, स्मार्त, वैष्णव,

गाणपत्य, सौर्यआदि प्रचलित है । इष्टदेव एक, दो अथवा बहुल होते हैं और स्थानीय संस्कृति के अनुसार उपासना पद्धति में भिन्नता भी हैं । यहाँ तक की देवदेवीयों के नाम भी स्थान के नाम से नामित प्राप्त होते हैं किन्तु तात्विक रूप में उपासक और उपास्य के विच व्यक्तिगत सम्बन्ध तथा तादात्म्य वैदिक दार्शनिक चिंतन तथा उपासना की अपनी विशिष्टता है । नेपाल में प्रचलित शक्ति उपासना का "स्वस्थानी" संस्करण भी वैश्विकशक्ति उपासना और शक्ति प्राप्तिका अनन्यतम साधन है । नेपाली समाज सदियौं से स्वस्थानी उपासना और साधना के माध्यम से अपनी अध्यात्मिक, दैविक तथा भौतिक इच्छाओं की पूर्ति कर लाभान्वित एवं आनन्दित होता रहा है । शक्ति उपासना, शक्ति अनुसन्धान तथा शक्ति साधना में समर्पित साधकों, विद्वानों तथा अनुसन्धता ले लिए यह कार्यपत्र जिज्ञासा जगाने का कार्य करेगा । भगवती स्वस्थानी हम सभी का कल्याण करें ।

पुस्तक सूचि

१. स्वस्थानी व्रतकथा (सन् १९२८) दूर्गा पुस्तक भण्डार वाराणसी भारत ।
२. स्वस्थानी व्रतकथा (वि.स.२०६४) महालक्ष्मी प्रकाशन,डिल्ली बजार, काठमाडौँ ।
३. लिंदा लुइस (सन् १९८५) स्वस्थानी ब्रत एवं नेवारी महिला, विस्कोन मेडिसन विश्वविद्यालय, अमेरिका https://archive.org/details/swasthani-vrata-newar-women-and-ritual-in-nepal-linda-louise-iltis/page/n7/mode/2up
४. https://kumar1.com.np/e-book-swasthani-brata-katha/
५. ऐश्वर्यधर शर्मा, स्वस्थानी , वव°सं° २०४५
६. प्रो. घटरमज भट्टराई, स्वस्थानी व्रतकथाको प्रारूप, गोरखमपत्र, २०४५
७. प्रो. धनवज्रब ज्राचार्य, लिच्छवि कालीन अभिलेख, अभिलेखालय